माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों की विषय– वस्तु का जीवन कौशलों के सन्दर्भ में अध्ययन एवं उनके विकास हेतु प्रदर्शन कला समेकित कार्यपत्रक निर्माण

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) की
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (शिक्षा) उपाधि की पूर्ति के
निमित्त प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

निर्देशिका
डॉ॰ मीनू सिंह

शोधकत्री
मन्जू बघेल

शिक्षा संकाय, पेडागॉजीकल साइंसेज
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा– 282005

2020

1.0.0 प्रस्तावना

भारत का अपना विशिष्ट संस्कृति और सभ्यता के कारण सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय स्थान रहा है। प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष मे जीवन कौशल की उत्कृष्टता दृष्टिगत होती है, उत्तर वैदिक काल में भारतीय समाज का उनके कार्य कौशल के आधार पर चार वर्णो मे विभाजन उस समय की जीवन कौशल पद्धिति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्तमान परिदृश्य तीव्रगामी न्यूक्लीयर तकनीकी और औद्योगिकी की अतिलाभदायी अन्धता के परिणामस्वरुप जनित आधुनिकीकरण वैश्वीकरण और वैश्विक आर्थिक व सामाजीकरण का है जिसने मानवीय भौतिक सुख सुविधाओं को तो चरम पर पहुँचाया है लेकिन इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के जीवन का दूसरा पक्ष अत्यंत गम्भीरता से प्रभावित है वह है व्यक्ति का जीवन सामंजस्य चाहे वह सामाजिक, आर्थिक,व्यक्तिगत हो अथवा पारस्परिक जीवन से सम्बन्धित,मानव बढती हुई तकनीकी उपयोगिता के कारण मानवीकृत ढंग से जनित सामाजिक जटिलताओं में खुद को सामंजस्थित करने की जद्दोजहद में है जिसका निराकरण कौशलों में निपुणता के द्वारा सम्भव है लेकिन भारत जैसे विशालकाय और विकासशील देश में जहॉ संसाधनो पर जनघनत्व जैसी भीषण समस्याऐं है मानव संसाधन का जीवन कौशल में पारंगत करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। भारतीय सन्दर्भ में विधार्थियों में विभिन्न प्रकार के मूल्यों और कौशलों के विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर समय–समय पर विभिन्न शिक्षा समितियों और शिक्षा नीतियों ने अपने–अपने सुझाव दिये और विधार्थियों में मूल्यों तथा विभिन्न प्रकार के कौशलों कों विकसित करने के लिए विषय वस्तु का निर्माण किया। जिसमे हम विभिन्न प्रकार के कौशलो का अध्ययन करते है । जीवन कौशल एक व्यापक अवधारणा है जो व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य ने अपने समाज के निश्चित नियम व कानून निर्धारित किये है। उन नियमों व कानूनों के उचित प्रकार अनुपालन करने मे सजगता और सहजता लाने के लिये मनुष्य विभिन्न प्रकार के कौशलों का निर्धारण करता है। जो कौशल वास्तविक जीवन में उपयोगी व लागू हो जीवन कौशल कहलाते है। मनुष्य विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास अपने स्वयं के जीवन में सहजता लाने के साथ–साथ समाजिक परिप्रेक्ष्यों और आवश्यकताओं की उददे्श्यपूर्ति को संज्ञान में रखकर करता है। मनुष्य पूर्व में

निर्धारित अपने समाज के निश्चित नियम व कानून का अनुपालन करने को प्रयासरत रहता है जोकि अत्यंत ही जटिल और असंरचित कार्य है क्योकि मानव एक संज्ञानात्मक प्राणी है जिसकी स्वयं की निजी अवधारणाऐं और प्रबल भावनाऐं होती है जिन्हे एकदम से नकारा नही जा सकता है इन्ही अवधारणाओं और प्रबल भावनाओं के द्वारा सम्पूर्ण मानव जीवन प्रभावित होता है तथा व्यक्ति की सकारात्मक व नकारात्मक जीवन शैली का निर्धारण होता है। जीवन कौशल मनुष्य को सरलता और सुगमता के साथ इस अतिवादी प्रौद्यौगिकी युग मे जीवन व्यतीत करने मे सहायक होते है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह कथन किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभावश हमारी शैक्षिक व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अन्तराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधरित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल–केन्द्रित शैक्षिक व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएँगे। इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों का वातावरण बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आजादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना–सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। भारत में जीवन कौशल विकास सम्बन्धी शिक्षा की औपचारिक व्यवस्थाओं पर बल दिया जा रहा है।

जीवन कौशल सम्बन्धी शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने पर बालकों के विकास और किशोर स्वास्थ्य शिक्षा के सन्दर्भ में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका का ज्ञान होता है। **संयुक्त राष्ट् का सम्मेलन द ओटावा चार्टर फॉर हेल्थ प्रमोशन (1986)** ने बेहतर स्वास्थ के एक उत्तम विकल्प के रूप में जीवन कौशलों का परिचय दिया। यूनेस्को का **सम्मेलन द कन्वेंशन ऑन द राइट ऑफ द चाइल्ड (UNCRC 1989)** ने शिक्षा में जीवन कौशलों को जोडनें और उनके विकास के लिए उत्तम अभ्यास पर ध्यान दिया। **जोमेटिन डिक्लेरेशन ऑन एजूकेशन (1990)** ने UNCRC 1989 का सहयोग किया और शिक्षा को जीवन

कौशलों के साथ समेकित कर उत्तम जीवन के लिए महत्वपूर्ण अधिगम साधन के रूप में बताया। द वर्ल्ड डेकर एजूकेशन कॉन्फ्रेन्स (2002) ने जीवन कौशल शिक्षा का महत्व लर्निंग टू नो, लर्निंग टू बी, लर्निंग टू डू और लर्निंग टू लिव टुगेदर के लिए निर्धारित छः लक्ष्यों को प्राप्त करने में (जीवन कौशलों) को महत्वपूर्ण साधन के रूप में बताया।

विश्व स्वास्थ संगठन (2003) की रिपोर्ट ने जीवन कौशलों की शिक्षा का सहयोग किया तथा दस प्रमुख जीवन कौशल निर्धारित किये। विश्व स्वास्थ संगठन ने जीवन कौशलों पर आधारित शिक्षा और शैक्षिक वातावरण के निर्माण पर अधिक बल दिया जिससे छात्रों में दैनिक जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक व वैयक्तिक समस्याओं का सामना करने और उनका उचित निराकरण करने की योग्यता का विकास करने के साथ– साथ विभिन्न परिदृश्यों के सन्दर्भ में समस्याओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2005)** ने किशोरों की शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य के लिए जीवन कौशलों को समन्वित रूप में प्रस्तुत किया है। इसके अनुसार जीवन कौशल शिक्षा दूसरों के प्रति विचारों और संवेदनशीलता की स्वतंत्रता है जो नई परिस्थितियों में उदार व कल्याण की सृजनात्मक भावनाओं को दर्शाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा से पूर्व के सभी NCF का कौशलों के सन्दर्भ में केन्द्रबिन्दु व्यावसायिक कौशलों की शिक्षा को पाठ्यक्रम का उद्देश्य बनाकर शिक्षण के लिए निरूपित करना था। शिक्षा के विविध साधनों व स्त्रोतों की अनदेखी किये जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजनात्मक पहलू को विकसित करने के लिये जरूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार है –विधार्थियों को प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण का ज्ञान कराना, विधार्थियों में मानवीय गुणों का विकास करना, विधार्थियों को मानवीय जरूरतों, कर्तव्यों व अधिकारों का ज्ञान कराना, विधार्थियों में गहन चिन्तन व कल्पना शक्ति का विकास करना, विधार्थियों को पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व वैयक्तिक अनुकूलन सिखाना और समाज के सक्रिय अभिकर्ता के रूप

में आधुनिक व मौलिक दक्षताओं का ज्ञान कराना। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) ने किशोरों की शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य के लिए जीवन कौशलों को शिक्षा के साथ समन्वित रूप में प्रस्तुत किया है, इससे पूर्व के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000, 1988 तथा 1975 में जीवन कौशलों पर कोई स्पष्ट दिशा निर्देशन दृष्टिगत नही है बल्कि उन्हें विभिन्न प्रकार के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक व व्यावसायिक मूल्य व कौशलों के रूप प्रस्तुत किया गया था। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) प्रो॰ यशपाल की अध्यक्षता में तैयार किया गया मसौदा था जो कि संविधान के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा किशोर और उनकी समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा प्रदत्त दस जीवन कौशलों को सन्दर्भ में लेकर जीवन कौशलों की शिक्षा को औपचारिक स्वरूप प्रदान किया।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने विधार्थियों के सन्दर्भ में व्यावसायिक कौशलों पर बल दिया तथा वर्तमान आवश्यकताओं को संज्ञान में लेकर जीवन कौशलों की शिक्षा के लिए एक औपचारिक शैक्षिक व्यवस्था लागू की है। 15 जुलाई 2015 को विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कौशल विकास योजना का प्रारम्भ किया जिसका उद्देश्य लगभग 40 करोड़ भारतीय मानवीय संसाधन को विभिन्न प्रकार के कौशलों में पारंगत कराकर उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति की नींव को मजबूत करना है। कौशल विकास योजना को प्रारम्भ करने का उद्देश्य विभिन्न प्रकार के कौशलों के प्रशिक्षण द्वारा लोगों में जीवन कौशलों को विकसित करना ळें

एन॰सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ की शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक 2020) के प्रस्ताव मे वर्णित किया गया है कि जीवन कौशलों के लिए शिक्षा और विधालयी शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षा नीतियों और पद्धतियों को प्राथमिकता दी जाय। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE Life Skills Education &CCE Class 9&10) ने निम्नलिखित जीवन कौशलों का वर्गीकरण किया है –स्वजागरूकता, निर्णय निर्माण,प्रभावी सम्प्रेषण,रचनात्मक और सृजनात्मक चिन्तन, समस्या समाधान, परानुभूति, संवेग प्रबन्धन, अन्तरवैयक्तिक सम्बन्ध तथा तनाव प्रबन्धन। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद, शिक्षा नीति (**2019**) तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) सभी जीवन कौशलों का वर्गीकरण, स्पष्टीकरण व सन्दर्भीकरण विश्व स्वास्थ्य संगठन

द्वारा प्रदत्त निर्देशों के सानिध्य में करते है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षण और मूल्यांकन में सरलता की दृष्टि से जीवन कौशलों का वर्गीकरण तीन मुख्य भागों सामाजिक कौशल, संज्ञानात्मक कौशल और मुकाबला (coping) कौशलों तथा पुनः उपकौशलों में विभाजन किया है। अमेरिकन स्वास्थ्य संगठन ने जीवन कौशलों का वर्गीकरण तीन मुख्य भागों सामाजिक कौशल, संज्ञानात्मक कौशल और मुकाबला (coping) कौशलों में तथा पुनः उपभागों में वर्गीकरण किया है। चार्ल्स फेडल ग्लोबल लीड एजूकेशन (CISCO 2008) सिस्टम पेरिस ने 21वीं सदी के लिए जीवन कौशलों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है–लचीलापन और सहनशक्ति, नवाचार और स्वनिर्देशन, सामाजिक और सांस्कृतिक कौशल, उत्पादकता और जबावदेही तथा नेतृत्व और उत्तरदायित्व। CISCO के फ्रेमवर्क में जीवन कौशलों का वर्गीकरण (Life & Career Skills) जीवन और केरियर कौशलों के रूप में किया गया है। नई शिक्षा नीति 2019 में भारत सरकार वर्तमान परिदृश्यों के अनुरूप आवश्यकताओं व चुनौतियों का समाधान करते हुए शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव लाने का प्रयास कर रही है।

शिक्षा नीति 2019 में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि – जीवन कौशल स्कूल पाठ्यक्रम का भाग होगा जो विश्व स्वास्थ संगठन (2014) के अनुदेशों का अनुपालन करेगा तथा इसके द्वारा स्पष्टीकृत है कि–"जीवन कौशल सकारात्मक व्यवहार अपनाने की योग्यता तथा व्यक्ति की दैनिक चुनौतियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामंजस्य करने की क्षमता है", यह पाठ्यक्रम को सन्दर्भित करेगा। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण विधार्थियों मे ऐतिहासिक, भौगौलिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक परिदृश्यों का विभिन्न सामाजिक परिप्रक्ष्यों मे अध्ययन करना और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका प्रयोग उचित प्रकार से करना सिखाना है। विभिन्न प्रकार के जीवन कौशलों के वर्गीकरण का अध्ययन करने के पश्चात शोधकत्री ने

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्गीकृत जीवन कौशलों को शोध अध्ययन के लिए चुना। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सर्वमान्य रूम से दस जीवन कौशल दिए है जो इस प्रकार है चित्र संख्या 1.0 से विश्व स्वास्थ संगठन (2014) द्वारा प्रस्तावित दस जीवन कौशलों को दर्शाया गया है–

चित्र संख्या 1.0 विश्व स्वास्थ संगठन (2014) द्वारा प्रस्तावित दस जीवन कौशल

विश्व स्वास्थ्य संगठन (1997) ने परिभाषित किया है कि जीवन कौशल व्यवहार में सकारात्मकता और प्रभावशीलता में वृद्वि को दर्शाता है। यह अभिव्यक्ति विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा 11–19 आयुवर्ग के विभिन्न देशों के बच्चों पर दैनिक जीवन कौशल और दैनिक व्यवहार में आने वाली समस्याओं के अध्ययन के परिणास्वरुप की गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रस्तावित दस जीवन कौशलों का स्पष्टीकरण व परिभाषीकरण आगे संक्रियात्मक परिभाषाओं में किया गया है। विकास की निर्णायक किशोरावस्था में जीवन की विभिन्न गतिविधियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सरलता और सजगता लायी जा सकती है यदि कुछ विशेष प्रकार के शिक्षण पाठ्य–सामग्री तथा पाठ्यपुस्तकों के प्रयोग द्वारा छात्रों को जीवन कौशलों में निपुण किया जाय तो किशोरावस्था में दैनिक व्यवहार में आने वाली समस्याओं को कम किया जा सकता है।

छात्रों मे जीवन कौशलों का विकास कैसे और किस प्रकार किया जा रहा है यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न तथा चुनौती है कि जीवन कौशल के जो भी माध्यम है वह किस स्तर और प्रकार के है तथा वह अपने लक्ष्य को भली प्रकार प्राप्त कर पा रहे है अथवा नही और जो कौशल विकसित हो रहे है वह किस स्तर के है। अतः सभी परिदृश्यों में जीवन कौशल अत्यंत उपयोगी है क्योकि इन कौशलों के सहयोग से ही बालक माता–पिता, शिक्षक, सहपाठी, पडोसी तथा अन्य रिश्तेदारों से किस प्रकार सम्प्रेषण स्थापित करना है यह सीखता है तथा वह जान पाता है कि उसे अपनी स्वीकृति तथा अस्वीकृति का प्रदर्शन किस प्रकार से करना है, साथ ही वह "नही" जैसे शब्दों की दैनिक महत्ता को पहचानकर उसका

सकारात्मकता के साथ उपयोग करना सीखता है भारतीय परिदृश्य में जीवन कौशल विकास के लिए अलग से कोई व्यवस्था नही है क्योकि भारतीय शिक्षा आज भी अधिकांशतः एकमार्गी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक प्रभावी भूमिका में दृष्टिगत होता है तथा छात्र–शिक्षक अन्तःक्रिया शिक्षक की प्रभावी भूमिका के कारण औपचारिकताओं से परिपूर्ण है। शिक्षण व्यवस्था में पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान होता है जो कि शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है भारतीय परिदृश्य में देखें तो आज भी पाठ्य–वस्तु के रूप में पाठ्य–पुस्तक को प्रधानता दी जाती है जबकि पाठ्य–पुस्तक, पाठ्य–वस्तु का एक साधन है। पाठ्य–पुस्तक शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसलिए इसकी उपयोगिता बढ़ जाती है। । विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षाक्रम को विषयगत किया गया है उन्ही में से एक है सामाजिक आवश्यकताऐं और मानक जिनकी पूर्ति के उद्देश्य से सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों का सृजन किया गया है।

सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों का उपयोग करते है जो कि महत्वपूर्ण साधन है जिसके माध्यम से भूतकाल से जुड़ी घटनाओं एवं उसमें लिए गए निर्णयों की जानकारी प्राप्त होती है, हमारी सामाजिक संरचना उन सभी जीवन कौशलों एवं व्यवहारगत उचित मानकों के सन्दर्भ का खजाना है जिसे पाठों के माध्यम से विधार्थियों तक पहुँचाया जाता है। सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों के माध्यम से छात्रों में जीवन कौशलों का विकास किया जाता है जिससे छात्र क्रियाशीलता के साथ सुनना, ग्रहण करना, भावनाओं का प्रदर्शन करना आदि सीखते है, वे सकारात्मक और नकारात्मक व्यवहार को समझते है और ठीक प्रकार से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करना सीखते है साथ ही वे अलग– अलग परिस्थितियों में सहानुभूति तथा परानुभूति की अभिव्यक्ति करना सीखते है।

जीवन कौशल युवकों में सकारात्मक स्व–छवि विकसित करने में सहायक होते है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) निर्देश देती है कि शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा नीरसता की जगह प्रसन्नता का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिये सामाजिक

विषय का पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान व बौद्विक स्तर का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है जिससे सामाजिक विषय का ज्ञान रोचक और क्रियात्मक ढंग से प्रदान किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 (अध्याय 4 के 4.6) में कहा गया है कि "मूलभूत विषयों और कौशलों का शिक्षाक्रमीय एकीकरण" जहॉ छात्रों को अपने लिए अपना शिक्षाक्रम चुनने के लिए विकल्प होंगे और उनमें एक लचीलापन भी वही दूसरी ओर ऐसे विषय और कौशल होंगे जो सभी को सीखने होंगे ताकि छात्र तेजी से बदलती दुनिया में बेहतर, सफल, नवाचारी, परिवर्तनशील और उत्पादक बन सकें। इसके लिए शिक्षा के सभी स्तरों पर खासतौर पर माध्यमिक स्तर पर फिल्म, संगीत और थिएटर या अन्य कलाओं पर विमर्श और चर्चा स्तर के मुताबिक किया जाय। धर्मकीर्ती जोशी, विद्या, व पूनम मुनजल (2010) ''स्किलिंग इण्डिया : द बिलिसन पीपुल्स चैलेन्ज'' मे बताया गया है कि भारत अपने विकास की चुनौतियों से निपटने के लिए युवा वर्ग को कौशल के अवसर दे व उनमें कौशलात्मक विकास को बढावा दें। भारत को अपनी नीतियों में भी परिवर्तन की आवश्यकता है, जिससे सभी व्यक्ति हुनरमन्द हो सकें।

जीवन कौशल किशोर बालक बालिकाओं और उनके अभिभावकों के मध्य सम्प्रेषण बाधाओं को दूर कर अच्छा सम्प्रेषण स्थापित करने में सेतु की तरह कार्य करते है (कुमार राजा तथा प्रवीन अब्बासी 2015, 2018)। जीवन कौशल किशोर बालक बालिकाओं को तनावग्रस्त परिस्थितियों का प्रभावपूर्ण ढंग से सामना करने के योग्य बनाते है जिससे वह अपने मानसिक,शारीरिक और क्रियात्मक सन्तुलन को बनाए रखता है तथा सकारात्मकता के साथ अधिगम और अन्य शैक्षिक गतिविधियों में संलग्न होने में सहज होता है (कोनेकेल के.ई. 2016)।

जीवन कौशल छात्रों में स्व–आत्मविश्वास और स्व–आत्मसम्मान विकसित करने मे सहायता करते है जिससे वे स्व–आत्मविश्वास और स्व–आत्मसम्मान को उत्कृष्ट बना सकते है जब कोई व्यक्ति विभिन्न प्रकार की आधुनिक चुनौतियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए आधारभूत कौशलों को सीख लेता है तो जीवन के प्रति वह अधिक आत्मविश्वसनीय, अभिप्रेरित तथा सकारात्मक अभिवृत्ति को प्रदर्शित करता है जिससे वह परिपक्व और उत्तरदायित्वों से परिपूर्ण निर्णयो को लेने में तथा विभिन्न

प्रकार के जोखिमों को वहन करने में सक्षम होता है। शिक्षा को रूचिकर तथा आनन्दमयी बनाने के लिए शिक्षा में कला को समन्वित करने पर वर्तमान में अधिक बल दिया जा रहा है। प्रदर्शन कला छात्रों में जीवन कौशल विकास में सार्थक भूमिका निभाती है तथा छात्रों की रचनात्मकता में वृद्वि करती है शैक्षिक सिद्धान्त भावात्मक बुद्वि पर अधिक बल देते है जबकि कला छात्रों की रचनात्मकता पर अतः दोनो समन्वित रूप से व्यक्तित्व की क्षमताओं, योग्यताओं और कल्पनाशक्ति में वृद्वि करते है। प्रदर्शन कला के अन्तर्गत कई प्रकार की कलाऐं सामिल है जैसे—रंगमंच, व्यंग, नृत्य, संगीत, इतिहास, ओपेरा, कविता, सर्कस, माइम खेल, कठपुतली तथा जादूगरी आदि। चित्र संख्या 1.1 से प्रदर्शन कला के अन्तर्गत सम्मिलित विभिन्न प्रकार की कलाओं को दर्शाया गया है—

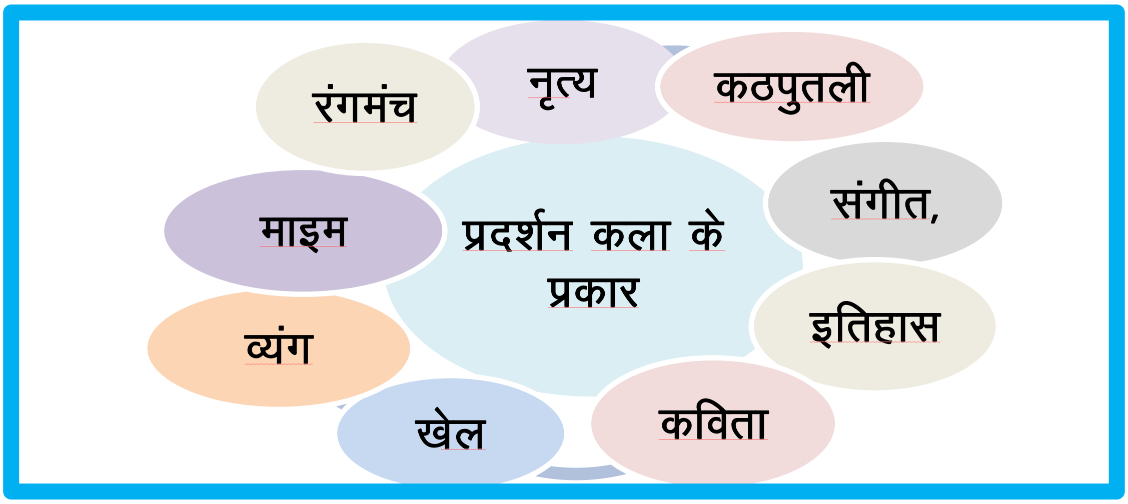

चित्र संख्या 1.1 प्रदर्शन कला के अन्तर्गत साम्मिलित कलाऐं

प्रदर्शन कला मानव के बेहतरीन जुडाव और व्यक्तिगत भलाई (Betterment) की शारीरिक और भावात्मक यात्रा है। शिक्षा में प्रदर्शन कला छात्रों के मष्तिष्क को व्यस्त रखने के साथ छात्रों को शारीरिक और भावात्मक रूप से सामुदायिक गतिविधियों से जोडती है जो कि सही मायने में मानवता है प्रदर्शन कला के माध्यम से वे स्वयं को समझ पाते है और स्वयं को प्रभावशाली ढ़ग से और आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त कर पाते हैं। छात्रों में आत्मसम्मान, परानुभूति, स्वअनुभूति, सृजनात्मक चिन्तन, तनाव प्रबन्धन तथा विरोधाभास जैसे जीवन कौशल समन्वित रूप में विकसित होते है (मैट बुचनान 2015)। प्रदर्शन कला प्रायः किसी भी कार्य को रूचिपूर्ण और आनन्ददायी बनाती है सामाजिक विज्ञान जैसे विषय जिसका एक

प्रमुख भाग इतिहास भी है के बारे में किसी कवि ने कहा है कि– **इतिहास इतनी बेवफा रातभर पढ़ी सुबह सफ़ा।** यदि इतिहास की किसी घटना (बौद्व कालीन शिक्षा) को नाटक या कठपुतली के माध्यम से प्रस्तुत किया जाय साथ ही छात्रों को अभ्यास के लिए प्रदर्शन कला आधारित रूचिकर व आनन्ददायी कार्यपत्रकों का प्रयोग किया जाय तो सामाजिक विज्ञान जैसा नीरस विषय भी छात्रों के लिए रूचिकर होगा तथा सामाजिक विज्ञान के लिए प्रयोग की जाने वाली पाठ्यवस्तु अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर पायेगी जीवन कौशल विकास भी उनमें से एक प्रमुख लक्ष्य तथा उद्देश्य है।

1.1.0 समस्या का प्रार्दुभाव

वर्तमान तकनीकी और प्रौद्योगिकी की तीव्रगामी परिर्वतनीय जीवनशैली के कारण जीवन कौशलो में ह्रास हुआ है। इस अतिवादी प्रौद्योगिकी युग में बढ़ते तकनीकी प्रभाव व वैश्विकग्राम में परिवर्तित होते हुए सम्पूर्ण विश्व तेजी से आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है परन्तु भारतीय समाज ने पूर्ण रुप से आधुनिकता और पाश्चात्यीकरण को स्वीकार नही किया गया है। प्राचीन समय मे देखे तो मनुष्य का जीवन सहज और सरल था परन्तु वर्तमान मे तकनीकी और आधुनिकता ने उसे अत्यन्त जटिल और असहज बना दिया है। तकनीकी और प्रौद्योगिकी युग से पहले जीवन कौशल विकास की औपचारिक आवश्यकता नही थी परन्तु वर्तमान की पारिवारिक एकीकरण प्रथा और बदलते सामाजिक परिदृश्य मे व्यक्ति को जीवन कौशलों मे पारंगत होना अतिआवश्यक है जिससे उसे एकांकीपन, अलगाव और सामाजिक सामंजस्य मे सरलता हो।

जीवन कौशल प्रायः दैनिक जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक व वैयक्तिक समस्याओं का सामना करने और उनका उचित निराकरण करने की योग्यता व दक्षता है जो जीवन को सरलता और सुगमता के साथ व्यतीत करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है जीवन कौशल अनेक प्रकार की योग्यताओं व दक्षताओं का एकीकृत रूप है। विश्व स्वास्थ संगठन (2014) ने दस प्रमुख जीवन कौशल बताए जो कि व्यक्तिगत विकास पर अधिक केन्द्रित है जिससे अभिप्राय यह है कि एक स्वस्थ्य सामाजिक और वैयक्तिक मानसिकता वाला व्यक्ति मानवता के कार्य कर सकता है। जैसा कि महान दार्शनिक अरस्तू ने कहा है– "स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का वास होता है।"

एक स्वस्थ्य मस्तिष्क स्वस्थ्य जीवन व्यतीत करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान तकनीकी और प्रौद्यौगिकी की तीव्रगामी परिर्वतनीय जीवनशैली के कारण दिन–प्रतिदिन समस्याऐं अत्यंत जटिल रूप लेती जा रही है। इन समस्याओं को सरलतापूर्वक हल कर पाना लगभग असम्भव सा हो गया है इसलिए इस सन्दर्भ में तकनीकी ढंग से कार्य करने की आवश्यकता है जीवन कौशल प्रायः जीवन को व्यतीत करने का तकनीकीकृत तरीका व उपागम है।

पारिवारिक एकीकरण प्रथा और बदलते सामाजिक परिदृश्य में व्यक्ति अलगाव व एकांकीपन के कारण निरन्तर रूप से मानसिक रोगों का शिकार हो रहा है जो वर्तमान की अत्यंत ज्वलंत समस्या है भारत जैसे विशालकाय देश में जहॉ विभिन्न प्रकार की धार्मिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति निवास करते है देश की अखण्डता व एकता बनाए रखने के लिए धार्मिक व सांस्कृतिक सहिष्णुता का निर्माण करना जरूरी है यह तभी सम्भव हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति कार्य कुशल या उत्पादकतापूर्ण होने के साथ– साथ मानवीय गुणों से युक्त होगा जो जीवन कौशलों के विकास से ही सम्भव हो सकता है। विश्व स्वास्थ संगठन (2014), काउन्सिल ऑफ बोर्ड्स ऑफ स्कूल्स एजूकेशन इन इण्डिया, कॉबसे (COBSE) और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली (CBSE) जैसी शैक्षिक संस्थाऐं तथा विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीय व अतंराष्ट्रीय संगठन विभिन्न स्तरों पर जीवन कौशलों के विकास के लिए कार्यरत है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE 2019) ने शैक्षिक सत्र की शुरूआत में सभी विषयों को कला के साथ समन्वित करने की बात कही है तथा सामाजिक विज्ञान जैसे महत्वपूर्ण विषयों का भी कला के साथ समन्वीकरण पर अधिक बल दिया है क्योकि सामाजिक विज्ञान एक ऐसा विषय है जो छात्रों को समाज का ज्ञान कराने के साथ– साथ समाजिक कर्तव्यों, अधिकारों एवं शासनप्रणाली की जानकारी कराता है तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से छात्रों को अवगत कराता है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE Life Skills Education &CCE Class 9&10) ने जीवन कौशलों की आवश्यकता और महत्व को दर्शाया है साथ ही उन मुद्दों को भी इंगित किया है जो कि छात्रों के लिए जीवन कौशलों की आवश्यकता और महत्व को बढ़ाते है किशोर और उनकी समस्याओं से सम्बन्धित प्रमुख मुद्दे इस प्रकार है– स्व पहचान का विकास, संवेग प्रबन्धन, सम्बन्ध निर्माण, साथी समूह का

दबाब, मीडिया, किशोरों का शिक्षा और नौकरी सम्बन्धी सूचनाओं को चुनना, सम्प्रेषण व संघर्ष की परिस्थितियों को नकारना आदि। उपरोक्त मुद्दों को संज्ञान में लेते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कक्षा 9 व 10 लिए निम्नलिखित जीवन कौशल बताए है – स्वजागरूकता, निर्णय निर्माण, प्रभावी सम्प्रेषण, रचनात्मक और सृजनात्मक चिन्तन, समस्या समाधान, परानुभूति, संवेग प्रबन्धन, अन्तरवैयक्तिक सम्बन्ध तथा तनाव प्रबन्धन। उपरोक्त विवरण को संज्ञान में लेते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड(CBSE 2019) ने शैक्षिक सत्र की शुरूआत में सभी विषयों को कला के साथ समन्वित करने पर बल दिया है सामाजिक विज्ञान जैसे महत्वपूर्ण विषय के अभ्यास को अधिक रूचिकर, आनन्ददायक तथा प्रभावी बनाने के लिए प्रदर्शन कला आधारित कार्यपत्रक उपयोगी होगें।

समय– समय पर हुए सर्वेक्षण तथा सरकार द्वारा प्रतिपादित शिक्षा समितियों, नीतियों एवं कानूनों को पाठ्यक्रम के माध्यम से भावी नागरिकों तक पहुँचाने का प्रयास करता है समाज के जागरूक नागरिक और शोधकत्री होने के नाते यह निर्णय लिया कि आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में किशोरावस्था की विभिन्न दशाओं का सामना करते विधार्थियों के जीवन कौशल विकास का अध्ययन पाठ्यक्रम के माध्यम से किया जाय तथा पाठ्यक्रम में सम्मिलित जीवन कौशलों के विकास के सम्बन्ध में नवीनता लाने के प्रयास किया जाय इस विचार से शोधकत्री द्वारा प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया गया।

1.2.0 समस्या की उपादेयता व औचित्य

ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु को अद्वितीय बनाया है चाहे वह जीव जगत हो, पादप जगत हो, अथवा पदार्थ ठीक इसी प्रकार संसार के प्रत्येक जीव का जीवन व्यतीत करने का अपना– अपना विशेष ढंग होता है। 21 वी सदी की शुरूआत में भारत ने सहस्त्राद्वि विकास लक्ष्यों के तहत लक्षित उद्देश्य में से एड्स, भुखमरी, साक्षरता दर तथा शिशु व मातृ मृत्युदर के निर्धारित मानकों कों 2015 तक प्राप्त कर लिया है जबकि अन्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भारत आज भी बहुत पिछडा है जिसका प्रमुख कारण है भारतीय मानवीय संसाधनों का विभिन्न प्रकार के जीवन कौशलों में पारंगत न होना है। जब सभी बालकों में सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की पाठ्य–वस्तु के शिक्षण व अध्ययन के माध्यम से जीवन कौशलों को पूर्णतया विकसित करने में सम्भव होगें तभी

विकासशील भारत की सहस्त्र प्रकार की समस्याओं गरीबी, कुपोषण, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार तथा आतंकवाद जैसी त्रासदियो को कम किया जा सकेगा। जीवन कौशलों में पारंगत जनसंसाधनों के उत्पादनयुक्त क्रियाकलापों से भारत विकास की उत्कृष्टता को चरम सीमा तक प्राप्त कर विश्व की सबसे बडी आर्थिक व सामाजिक महाशक्ति के रूप में विकसित हो सके। उपर्युक्त लक्ष्यों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब जनमानस को विभिन्न प्रकार के जीवन कौशलों में पारंगत किया जाय। जीवन कौशलों में निपुणता के लिए, उत्कृष्ट व अनुपयोगी सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की पाठ्य–वस्तु का अध्ययन छात्रों के सन्दर्भ में तकनीकी और प्रौद्योगिकी का अनुपयोग सुनियोजित ढंग से करना है।

प्राचीनकाल में समाजिक स्वरूप सहज था परन्तु वर्तमान में तकनीकी और प्रौद्यौगिकी की तीव्रगामी परिर्वतनीय जीवनशैली के कारण जीवन का स्वरूप जटिलता के चरम पर है जिससे जीवन यापन अत्यंन्त ही चुनौतीपूर्ण होता जा रहा। दैनिक जीवन की चुनौतिया प्रतिस्पर्दा से परिपूर्ण होती जा रही है। उपरोक्त सहस्त्र कारणो से जीवन को उचित प्रकार से व्यतीत करने के लिए तकनीकीयुक्त दक्षताओं और कुशलताओं की आवश्यकता है, जो समन्वित रूप से मिलकर जीवन कौशल कहलाती है।

विधार्थी प्रायः देश की भावी पीढ़ी होती है जिसके ऊपर भविष्य की सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक व राजनैतिक विकास की आकांक्षाओ का भार होता है। इसलिए भावी पीढ़ी को भविष्य में आने वाली चुनौतियों के अनुरुप तैयार करना एक जटिल समस्या है। सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों का अध्ययन प्रायः छात्रों को जीवन कौशलों के सन्दर्भ में कराया जाता है परन्तु विधार्थियों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा को जीवन कौशलों से युक्त करने के उेद्धश्य की पूर्ति से समय–समय पर विश्लेषण होना अति आवश्यक है। अतः हम कह सकते है कि जीवन कौशल वर्तमान समय में विधार्थियो के स्वस्थ सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, राजनैतिक व पारिवारिक जीवन व्यतीत करने के लिए अत्यंन्त आवश्यक है। हम 21वी सदी में रह रहे है जो तीव्रगामी तकनीकी और प्रौद्योगिकी परिवर्तनों का युग है जिसके परिणामस्वरूप समाज का स्वरूप अत्यंत ही जटिलता की ओर बढ़ रहा है जिसके साथ सामंजस्य स्थापित करने तथा जीवन को सरलता से व्यतीत करने के लिए व्यक्ति को दिन प्रतिदिन

अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता है जिनमें एकांकीपन, अलगाव तथा मानसिक असन्तुलन आदि अनेक प्रकार की प्रमुख समस्याऐं है। इन समस्याओं के निराकरण के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के जीवन कौशलों पर ध्यान दिया जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने सर्वमान्य रूप से दस प्रकार के जीवन कौशल बताए है। इन कौशलों की सहायता से मानव खुशहाली और समृद्दि सूचकांक को बढा़या जा सके। जीवन कौशलों में कमी प्रायः तृतीय विश्व (विकासशील देश) में अधिक पायी जाती है चूँकि भारत एक समृद्वशाली राष्ट्र हाते हुए भी अनेक प्रकार की समस्याओं बेरोजगारी, कुपोषण तथा न्यूनतम विकासदर व न्यूनतम औद्योगिक सुगमता स्तर आदि से ग्रसित होने के कारण विकासशील राष्ट्ो की श्रेणी में आता है। उपरोक्त समस्याओं को तभी समाप्त किया जा सकता है जब प्रारम्भ से ही छात्र विभिन्न प्रकार के जीवन कौशलों में पारंगत हो और उनका तकनीकी ढंग से उचित उपयोग करे। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी ने अनुवर्ती शोध अध्ययन पर बल दिया है। जीवन कौशल विकास एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं, मुद्दो तथा उपलब्धियों का मल्ूयाकंन किया जा सके। जीवन कौशल विकास परक शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न अनुसन्धान कार्य किए गए हैं जैसे–

सिंह,एम.(2003) लाइफ स्किल्स इन नॉन फॉर्मल एजूकेशन अ रिव्यू, न्यू देलही नेशनल कमीशन एण्ड यूनेस्को। यूनेस्को के अन्तर्गत न्यू देलही नेशनल कमीशन के द्वारा लाइफ स्किल्स इन नॉन फॉर्मड एजूकेशन अ रिव्यू, पर अध्ययन किया गया। अध्ययन का परिणाम यह रहा कि जीवन कौशल प्रत्येक व्यक्ति में उनके सामाजिक व आर्थिक वातावरण के अनुरूप पाए जाते है। इनमें वृद्वि के लिए सामाजिक व आर्थिक वातावरण को सम्पन्न बनाया जाय।

रॉबर्ट, एम. (2005) "इम्पैक्ट ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन ऑन अडोलसंस सेक्सुअल रिस्क बिहेवियर इन क्वाजलु नटाउ साउथ अफ्रीका।" प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जीवन कौशलों की शिक्षा प्राप्त करने के बाद लोग सेक्स के प्रति जागरूक हुए साथ ही HIV/AIDS जैसी बीमारियों के प्रति उनमें जागरूकता आयी है और वे सेक्सुअल सावधानियों को संज्ञान में लेने लगे।

कॉम्पो, एट॰ ऑल॰ (2007), "इफेक्ट ऑफ लाइफ स्किल्स ट्रेनिग ऑन मेडिकल स्टूडेन्ट्स परफॉरमेन्स इन डीलिंग विद कॉम्पलेक्स क्लीनिकल केसेज। प्रस्तुत अध्ययन में मेडिकल स्टूडेन्ट्स की परफॉरमेन्स पर जीवन कौशल प्रशिक्षण का प्रभाव देखा गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जीवन कौशलों मे प्रशिक्षित सोफोमोर मेडीकल के छात्र कॉम्पलेक्स क्लीनिकल केसेज को अधिक बेहतरीन ढंग से हल करते है, सोफोमोर मेडीकल के अप्रशिक्षित छात्रों की तुलना में।

सुरेश॰ वाई॰ (2008) "लाइफ स्किल्स एजूकेशन टू रिड्र्यूज लेवल्स ऑफ रिस्क फेक्टर्स इन अडोलसंस एण्ड यंग पीपल" यह शोध अध्ययन अपराधिक प्रवृत्ति के बालकों पर जीवन कौशलों के प्रभाव का अध्ययन किया गया। जिसका परिणाम यह रहा कि उच्च जीवन कौशलों से युक्त बालकों में अपराध की प्रवृत्ति कम पायी जाती है तथा बालकों में अपराध की प्रवृत्ति का जोखिम कम होता है।

मार्टिन के॰ नेल्सन, एट॰ ऑल. (2013) "इफेक्टिवनेस ऑफ स्कूल बेस्ड लाइफ स्किल्स एण्ड अल्कोहल एजूकेशन प्रोग्राम्स। इस शोध कार्य में स्कूल आधारित जीवन कौशलों और अल्कोहल एजूकेशन प्रोग्राम्स के प्रभाव का अध्ययन छात्रों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया। जिसका परिणाम यह रहा कि स्कूल आधारित जीवन कौशलों और अल्कोहल एजूकेशन प्रोग्राम्स का छात्रों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है।

कोनकेल, के॰ ई॰(2016) "इज अ लाइफ स्किल ट्रेनिग इनफ्यूजन एन इफेक्टिव स्टडी टू रिड्यूज सब्सटेन्स यूज अमंग एट रिस्क टीन्स इन अ मॉनीटरिंग प्रोग्राम, कोरालोडा स्टेट यूनिवर्सिटी।" प्रस्तुत अध्ययन में जीवन कौशल प्रशिक्षण द्वारा टीन्स के गलत तरीके से सब्सटेन्स प्रयोग के जोखिम का अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि कोरालोडा स्टेट यूनिवर्सिटी के जीवन कौशलों में प्रशिक्षित छात्रों द्वारा गलत तरीके से सब्सटेन्स प्रयोग का जोखिम कम पाया गया अप्रशिक्षित छात्रों की अपेक्षा।

यादव, बी॰ शशिकला (2017) "डवलपमेण्ट लाइफ स्किल्स प्रोग्राम एण्ड स्टडी इटस् इफेक्ट ऑन लाइफ स्किल एबिलिटी ऑफ स्टूडेण्टस् ।" प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि लाइफ स्किल्स डवलपमेण्ट प्रोग्राम ने छात्रों के जीवन कौशलों को मोडरेट किया।

अब्बासी, पी० (2018) "द इफेक्ट ऑफ लाइफ स्किलस् ट्रेनिग ऑन रिड्यूसिंग द हाइ रिस्क बिहेवियर अमंग हाईस्कूल स्टूडेण्ट्स इन केरमनशाह, नॉर्थ वेस्ट ऑफ इरान। "प्रस्तुत अध्ययन में केरमनशाह, नॉर्थ वेस्ट ऑफ इरान के हाई रिस्क बिहेवियर पुलिस रिकॉर्ड वाले मुल्लाह सदर हाइस्कूल और केरमनशाह सिटी स्कूल के 453 छात्रों के हाइ रिस्क बिहेवियर पर जीवन कौशल ट्रेनिग के प्रभाव का अध्ययन किया गया। प्रदत्तों का प्री तथा पोस्ट टेस्ट द्वारा विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च जीवन कौशलों से युक्त बालकों में अपराध की प्रवृत्ति कम पायी जाती है। तथा बालकों के व्यवहार में अपराध की प्रवृत्ति का जोखिम कम होता है।

जीवन जे० (2019) "इफेक्ट ऑफ कॉपरेटिव लर्निग ऑन अकेडमिक एन्जाइटी सोशल स्किल एण्ड अचीवमेण्ट इन सोशल स्टडीज ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट।" प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के सहगामी अध्ययन का छात्रों की अकेडमिक तनाव तथा सामाजिक कौशल व उपलब्धि पर प्रभाव पडता है। छात्रों की सामाजिक और व्यक्तिगत उपलब्धियों के साथ–साथ अकेडमिक तनाव पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है ।

उपराक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल और उनके विकास में योगदान पर आधारित प्रमुख शोध हुए हैं। परन्तु प्रस्तुत शोध अध्ययन के सन्दर्भ मे बहुत कम शोध हुए हैं प्रस्तुत शोध अध्ययन के विषय में प्रमुख शोध प्रश्न निम्नलिखित है। जिसकी खोज प्रस्तुत अध्ययन की सार्थकता की ओर इंगित करती है।

- क्या माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पाठ्य–पुस्तकें जीवन कौशल विकास के सन्दर्भ मे योगदान अदा कर रही हैं?
- क्या जीवन कौशलों के सन्दर्भ में सामाजिक विज्ञान की उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 व 10 की संचालित पाठ्य–पुस्तकें अधिक प्रभावी है ?
- क्या जीवन कौशलों के सन्दर्भ में सामाजिक विज्ञान की उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 व 10 की संचालित पाठ्य–पुस्तकों का शिक्षण अभ्यास अधिक प्रभावी है ?

- क्या जीवन कौशलों के विकास में सामाजिक विज्ञान की उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 व 10 की संचालित पाठ्य–पुस्तकों के पाठ के अभ्यास को प्रभावी बनाया जा सकता है?

विधार्थियो को प्रदान की जाने वाली शिक्षा को जीवन कौशलों से युक्त करने के उेद्धश्य की पूर्ति से समय–समय पर विश्लेषण होना अति आवश्यक है। अतः इसी के पुनःवलोकन के दृष्टिकोण से प्रस्तुत शोध समस्या को लिया गया है।

1.3.0 शोध अध्ययन कथन

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों की विषय– वस्तु का जीवन कौशलों के सन्दर्भ में अध्ययन एवं उनके विकास हेतु प्रदर्शन कला (Performing Arts) समेकित कार्यपत्रक (Worksheets) निर्माण।

1.4.0 संक्रियात्मक परिभाषाऐं

जीवन कौशल प्राय एक नवीनतम सम्प्रत्यय है जो कि अनेक प्रकार के कौशलों का एक समूह है। कौशल शब्द की उत्पत्ति प्राय अभियात्रिंकी से हुई है। यह किसी कार्य को सुनियोजित ढंग से सम्पन्न करने की दक्षता, योग्यता अथवा तकनीकी ज्ञान है। शिक्षा के क्षेत्र में कौशल शब्द बहुत प्रचलित है इसका उपयोग पाठ्यक्रम निर्माण, ज्ञान, समझ, व शिक्षण आदि सम्प्रत्ययों के लिए किया जाता है।

1.4.1 कौशल (Skills)

कौशल प्रायः किसी व्यक्ति को शिक्षा या किसी कार्य के क्षेत्र मे प्राप्त की जाने वाली दक्षता व योग्यता का तकनीकी ज्ञान है। जब प्रशिक्षणार्थिओं को किसी निश्चित कौशल के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है एवं प्रशिक्षणोपरान्त जब उनका मूल्याकंन किया जाता है तो उसकी उपलब्धि कौशलात्मक विकास की सीमा को दर्शाती है।

1.4.2 जीवन कौशल (Life Skills)

जीवन कौशल एक नवीनतम सम्प्रत्यय है। इसका उपयोग विशेष रूप से स्वास्थ्य और पुर्नउत्पादन स्वास्थ्य के सन्दर्भ में किया जाता है शिक्षा के क्षेत्र में यह सम्प्रत्यय विश्व स्वास्थ संगठन (2014) ने स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक और वैयक्तिक स्वास्थ सम्बन्धों के सन्दर्भ में दिया है जबकि काउन्सिल ऑफ बोर्ड्स ऑफ स्कूल्स एजूकेशन इन इण्डिया, कॉबसे (2004) ने जीवन कौशलों को मनोवैज्ञानिक –सामाजिक और अन्तरवैयक्तिक सम्बन्धों की दक्षता के रूप में परिभाषित किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन **(1997)** ने जीवन कौशलों को इस प्रकार परिभाषित किया है– "जीवन कौशल व्यक्ति के दैनिक जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने की दक्षता, तथा विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में सकारात्मक व्यवहार करने की योग्यता है।"

काउन्सिल ऑफ बोर्ड्स ऑफ स्कूल्स एजूकेशन इन इण्डिया, कॉबसे (2004) के अनुसार – "जीवन कौशल मनो– सामाजिक दक्षताओं और अन्तरवैयक्तिक योग्यताओं का एक समूह है जिसकी सहायता से व्यक्ति निर्णय निर्माण, प्रभावी सम्प्रेषण और तनाव सामंजस्य के लिए स्व–प्रबन्धन कौशलों का विकास करते है जिससे वह स्वस्थ तथा उत्पादनपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।"

समन्वित रूप में जीवन कौशल सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, राजनैतिक व पारिवारिक दैनिक चुनौतियों का सामना करने व विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों मे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करके सकारात्मक व्यवहार करने की योग्यताओं, क्षमताओं और दक्षताओं का एक समूह है। विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा प्रस्तुत दस जीवन कौशलों का परिभाषीकरण–

1.4.3 स्व–जागरुकता (Self Awareness)

स्व–जागरुकता प्रायः अपने आस पास के वातावरण तथा उसमें हाने वाली घटनाओं तकनीकियों का ज्ञान खोज इत्यादि से परिचित होना है जो केवल जीवन मे सहायक ही नही होती बल्कि अच्छी तरह से जीवन जीने की कला सिखाती है यदि हम जीवन के हर पल को सजगता के साथ जिए तो जीवन

आसानी से गुजरता है। क्योकि सजग अध्यापक व छात्र ही ज्ञान के नए दीप प्रज्वलित करता है और कोई भी दीपक स्वयं जले बिना दूसरे अन्य दीपकों को प्रज्वलित नही कर सकता है।

1.4.4 परानुभूति (Empathy)

समाज में एक दूसरे के साथ सफल व सकारात्मक सम्बन्ध बनाए रखने के लिए एक दूसरे की जरूरत, इच्छा व भावनाओं को समझने की आवश्यकता होती है परानुभूति वह कल्पनाशक्ति है जिसमें व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के चरित्र को स्वयं पर लागू करके परिस्थिति को समझने का प्रयास करता है।

1.4.5 आलोचनात्मक चिन्तन (Critical Thinking)

आलोच–नात्मक चिन्तन बौद्विक रूप से अनुशासित प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं का संग्रहण अवलोकन व अनुभव जनित क्रियात्मक अवधारणओं के कौशलात्मक संश्लेषण– विश्लेषण और उनके अनुप्रयोग को दर्शाती है जो कि पूर्व निर्देशित है। किसी सूचना को अनुभवों के आधार पर वस्तुनिष्टता के साथ विश्लेषण करने की विधि व योग्यता जो हमारी स्वस्थ अभिवृत्ति को विकसित करती है तथा मीडिया व अन्य साथी समूह के दबाव को कम करती है जिससे हम नए–नए विचारों का सृजन करते है।

1.4.6 सृजनात्मक चिन्तन (Creative Thinking)

सृजनात्मक चिन्तन वह होता है जिसमे नवीनता के साथ–साथ क्रियात्मकता भी होती है जो किसी नए उत्पादन के प्रति उत्तरदायी भी हो। किसी सूचना, घटना तथा अनुभवों के प्रति कुछ नया करने की ललक के साथ अपने विचारों की अभिव्यक्ति करना।

1.4.7 निर्णय निर्माण (Dicision Making)

निर्णय निर्माण वह प्रक्रिया है जो लोगों को सिखाती है किस प्रकार क्रियाशीलता के साथ निर्णय लिए जा सकते है व किसी मुद्दे को हल करने की प्रक्रिया जो सभी सम्भावित और पर्याप्त विकल्पों के साथ परिस्थितियों के अनुकूल प्रभावपूर्ण समाधान प्रस्तावित करना जिसमें सकारात्मकता परिलक्षित हो। सम्बन्धों के बचाव की जैसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में निर्णय निर्माण बहुत लाभदायक होता है।

1.4.8 समस्या समाधान (Problem Solving)

समस्या समाधान जीवन में आने वाली समस्याओं को सृजनात्मक ढ़ंग से निराकरण करने की प्रक्रिया है। यह हमारे जीवन में आने वाली दैनिक समस्याओं को हल करनी की बेहतर तकनीक से अवगत कराता है यदि सार्थक समस्याओं का समाधान यदि ठीक समय पर न हो तो यह शारीरिक और मानसिक तनाव का कारण बनती है।

1.4.9 प्रभावी सम्प्रेषण (Effective Communication)

प्रभावी सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक लोगो के बिना किसी अवधान के संदेशो का आदान प्रदान होता है। प्रभावी सम्प्रेषण में एक सूचना प्रदाता अपनी सूचना को इस प्रकार से सम्प्रेषित करता है कि सूचना ग्राहता उसी स्वरूप में ग्रहण करे जिसमें कि वह भेजता है। सूचना ग्राहता पूर्ण क्रियाशीलता दर्शाता है कि उसने सभी बिन्दुओं को ठीक प्रकार ग्रहण किया।

1.4.10 अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध (Interpersonal Relationship)

प्रभावी सम्प्रेषण वह है जिसमे सूचना प्रदाता और ग्राहता दोनो अपनी भावनाओ को अभिव्यक्त करते है अतः अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के लिए प्रभावी सम्प्रेषण और एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान अत्यंत आवश्यक है। अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध प्रायः सामाजिक श्रृंखला की एक व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति घर, पडोस, रिश्तेदार, कार्यालय तथा विधालय आदि के साथ अपने औपचारिक व अनौपचारिक सम्बन्धों के उत्तरदायित्वों के निर्वाहन करता है।

1.4.11 तनाव प्रबन्धन (Coping with Stress)

यह एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति चेतनावस्था के साथ जीवन की समस्याओं के निराकरण, स्पष्टीकरण, न्यूनीकरण तथा हल करता है। इसमें नकारात्मकता को नकारा जाता है तथा सकारात्मक व्यावहारिक छवि की प्रभावशीलता होती है। तनाव किसी समस्या या घटना के कारण व्यक्ति की वह अवस्था है

जिसमे व्यक्ति स्वयं को बदहवास समझता है। वह अनावश्यक मानसिक दबाब में होता है। तनाव प्रबन्धन प्रायः अनावश्यक मानसिक दबाब को हटाने की तकनीकी है।

1.4.12 भावनात्मक प्रबन्धन (Coping with Emotions)

भावनाओं को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने की योग्यता कि नकारात्मक संवेगो का न्यूनीकरण कर सकारात्मकता के साथ प्रस्तुतीकरण करे यह प्राय स्वविकासात्मक सत्र की एक श्रृंखला है जिसमें आधारभूत कौशलों को सीखना सिखाना प्रमुख होता है जो प्रभावी सम्प्रेषण तथा साथी समूह के साथ व्यवहार सिखाता है विशेषरुप से किशोरावस्था में बालक को तीव्र शारीरिक विकासात्मक अवस्थाओं से गुजरना पडता है जिसके परिणास्वरुप बालक को अन्तरवैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सम्बन्धों का निर्वाहन करने में कठिनाई होती है क्योकि बालकों के मानसिक स्थायित्व में कमी होती है जिसके कारण वे क्रोध तथा अन्य हानिकारक संवेग प्रबन्धन मे असहज होते है।

1.4.13 विषय– वस्तु विश्लेषण (Content Analysis)

कैपलन.ए (1943) के शब्दों में– "विषय– वस्तु विश्लेषण एक विशेष संप्रेक्षण के अन्तर्गत निहित आशयों का क्रमबद्ध तथा मात्रात्मक रूप से विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।" विषय– वस्तु विश्लेषण सामान्यतः संयोग रूप से प्राप्त सामग्री के विवरणों को ऐसा विशिष्ट रूप प्रदान करने का प्रयास करता है। व्यवहारपरक विज्ञानो में सामान्यतया अधिकांश विषय– सामग्री का स्वरूप गुणात्मक होता है, अथवा शाब्दिक, लिखित, सूचना संचारित साधनों का वर्गीकरण ,सारणीकरण सांकेतिक रहता है। ऐसी सामग्री को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने के लिए उसके क्रमबद्ध वर्गीकरण, सारणीकरण सांख्यिकीय विश्लेषण तथा उपयुक्त सामान्यीकरण की आवश्यकता है।

1.4.14 माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) के अनुसार–"माध्यमिक शिक्षा सामान्यतः कक्षा 9–12 की शिक्षा को कहते है, यह प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के मध्य की कड़ी है। "माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा

व्यवस्था का सबसे प्रमुख भाग होता है यहाँ पर सबसे अधिक तीव्र शारीरिक व मानसिक परिवर्तनों का सामना कर रहे बालको को उनकी चुनौतियों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने का दारोमदार होता है क्योकि छात्र की भावी शिक्षा (कला, विज्ञान व कॉमर्स) की दिशा यही पर निर्धारित होती है।

1.4.15 सामाजिक विज्ञान ,

मेलिसा,के॰,(2018)–"सामाजिक विज्ञान प्रायः विज्ञान की वह शाखा है जो मानवीय समाज का मानव के व्यवहार व उसके अन्तरवैयक्तिक सम्बन्धों का समाज के सदस्य के रूप में अध्ययन करता है।"सामाजिक विज्ञान वह शाखा है जो मानव के व्यवहार का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, व्यावसायिक व धार्मिक परिदृश्यों के सन्दर्भ में अध्ययन करती है।

1.4.16 सामाजिक विज्ञान का शिक्षण

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के अन्तर्गत भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का प्रमुख उद्धेश्य बालक के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक,व्यावसायिक व वैयक्तिक गुणों का विकास करना है। सामान्य रूप से सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण परंपरागत कक्षाकक्ष में पुस्तकों के पठन, वाचन व शिक्षक के व्याख्यान के रूप में होता है कुछ विशेष विधालयों की शैक्षिक व्यवस्था को छोड़कर। अतः हम कह सकते है कि शैक्षिक वातावरण में व्यवहारगत विज्ञानों का अधिगम व पठन–पाठन ही सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण कहलाता है।

1.4.17 प्रदर्शन कला (Performing Arts)

प्रदर्शन कला वे कलाऐं है जिनमें कलाकार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं व श्रृव्य–दृश्य सामग्रियों का प्रयोग कर स्व अभिव्यक्त के साथ कला का प्रदर्शन करता है। प्रदर्शन कला मानव के बेहतरीन जुडाव और व्यक्तिगत भलाई (Betterment) की शारीरिक और भावात्मक यात्रा है। दृश्यकला में कलाकार अपनी कला का उपयोग कर विभिन्न प्रकार की भौतिक वस्तुऐं बनाते है जैसे कि चित्र, शिल्प तथा आलेखन आदि। प्रदर्शन कला के अन्तर्गत कई प्रकार की कलाऐं सामिल है। इन सब में समानता यह है कि इन्हे प्रत्यक्ष रूप में दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।

मैट बुचनान (2015)–"शिक्षा में प्रदर्शन कला छात्रों के मष्तिष्क को व्यस्त रखने के साथ छात्रों को शारीरिक और भावात्मक रूप से सामुदायिक गतिविधियों से जोडता है जो कि सही मायने में मानवता है प्रदर्शन कला के माध्यम से वे स्वयं को समझ पाते है और स्वयं को प्रभावशाली ढ़ग से और आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त कर पाता है। छात्रों में आत्मसम्मान, परानुभूति, स्वअनुभूति, सृजनात्मक चिन्तन, तनाव प्रबन्धन तथा विरोधाभास जैसे जीवन कौशल समन्वित रूप में विकसित होते है।"

1.4.18 कार्यपत्रक (Worksheets)

विशेष रूप से छात्रों के पाठ अभ्यास के लिए तैयार किया गया एक प्रपत्र जो किसी विषय के पाठ की ज्ञान और समझ को बढ़ाने के लिए कक्षीय वातावरण में कुछ प्रश्न और लक्ष्यों के साथ छात्रों के प्रोन्नति विवरण की जरूरतों को पूरा करता हो कार्यपत्रक कहलाता है।

1.5.0 शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों के पाठ्य–वस्तु शिक्षण द्वारा विकसित हाने वाले जीवन कौशलों का अध्ययन है तथा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की विषयवस्तु का विश्लेषण व जीवन कौशल विकसित करने के लिए प्रदर्शन कला पर आधारित कार्यपत्रकों का निर्माण करना है। शोधकत्री के द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के सन्दर्भ में निम्नलिखित शोध उद्देश्यों का निर्माण किया गया–

- माध्यमिक स्तर पर उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की विषय सामग्री का जीवन कौशल विकास के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की विषय सामग्री का जीवन कौशल विकास के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- कक्षा 9 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की पाठ्य–वस्तु के शिक्षण अभ्यास हेतु प्रदर्शन कला आधारित कार्यपत्रकों का निर्माण करना।

- कक्षा 10 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की पाठ्य–वस्तु के शिक्षण अभ्यास हेतु प्रदर्शन कला आधारित कार्यपत्रकों का निर्माण करना।
- कक्षा 9 की पाठ्य–पुस्तकों की पाठ्य–वस्तु के शिक्षण अभ्यास के सन्दर्भ में कार्यपत्रकों (Worksheets) की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- कक्षा 10 की पाठ्य–पुस्तकों की पाठ्य–वस्तु के शिक्षण अभ्यास के सन्दर्भ में कार्यपत्रकों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

1.6.0 शोध अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों की विषय– वस्तु का जीवन कौशलों के सन्दर्भ में अध्ययन एवं जीवन कौशल (Life Skills) विकसित करने के लिए प्रदर्शन कला (Performing Arts) पर आधारित कार्यपत्रकों (Worksheets) के निर्माण का अध्ययन है जो विश्व स्वास्थ संगठन (2014) द्वारा दिए गए दस प्रकार के जीवन कौशलों पर केन्द्रित है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की निम्नलिखित परिसीमाऐं है–

- माध्यमिक स्तर की सामाजिक विज्ञान की उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पाठ्य–पुस्तकों का जीवन कौशल विकास के सन्दर्भ में अध्ययन है।
- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 व 10 का अध्ययन है।
- प्रस्तुत अध्ययन विश्व स्वास्थ्य संगठन (2014) द्वारा प्रदत्त जीवन कौशलों के सन्दर्भ में सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों का विश्लेषण है।
- प्रस्तुत अध्ययन जीवन कौशल (Life Skills) विकसित करने के लिए प्रदर्शन कला (Performing Arts) पर आधारित कार्यपत्रकों (Worksheets) का निर्माण करना है।

1.7.0 शोध अध्ययन की अभिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकत्री ने पूर्वनिर्धारित योजना निर्मित कर अपने शोध अध्ययन को आगे बढ़ाया जिसमें प्रतिदर्श चयन, प्रविधि, और सांख्यिकीय तकनीकी के साथ–साथ सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया जाएगा जिससे शोध अध्ययन सुगमता के साथ पूर्णता की ओर बढ़े। प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि तथा सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों के पाठ्य–वस्तु विश्लेषण के लिए शोधकत्री द्वारा विषयवस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया जाएगा।

1.8.0 शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकत्री ने निम्नलिखित शोध अध्ययन विधि का अनुसरण किया। चित्र संख्या 1.2 से शोध अध्ययन विधि को दर्शाया गया है।

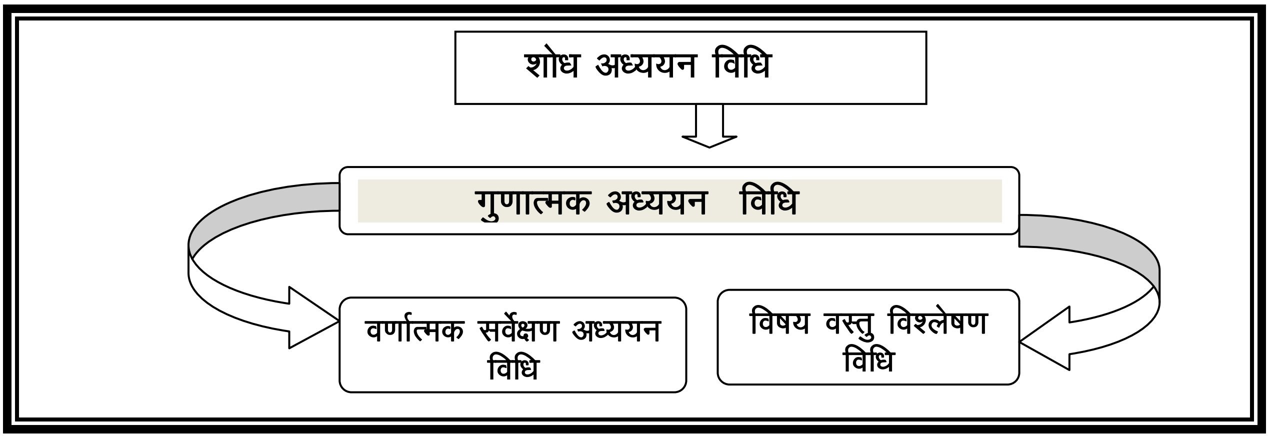

चित्र संख्या 1.2 अध्ययन विधि का प्रदर्शन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री द्वारा गुणात्मक अध्ययन विधि के अर्न्तगत वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि तथा सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों के पाठ्य–वस्तु विश्लेषण के लिए शोधकत्री द्वारा विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री ने सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों के पाठ्य–पुस्तकों के कला समेकित शिक्षण अभ्यास के लिए जीवन कौशल (Life Skills) विकास के सन्दर्भ में प्रदर्शन कला (Performing Arts) पर आधारित कार्यपत्रकों (Worksheets) का निर्माण करने के लिए उपरोक्त शोध अध्ययन विधि का अनुसरण किया जाएगा।

1.9.0 न्यादर्श प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उददेश्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का चयन सउद्देश्य विधि के माध्यम से किया जाएगा जिसमें 5 विधालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि से किया जाएगा तथा कक्षाओं का चुनाव क्लस्टर चयन न्यादर्श विधि के माध्यम से चयन किया जाएगा। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु कुल 400 सामाजिक विज्ञान के विधार्थी, 20 शिक्षक तथा 4 विषय विशेषज्ञों का चयन किया जाएगा। चित्र संख्या 1.3 से न्यादर्श चयन विधि को दर्शाया गया है।

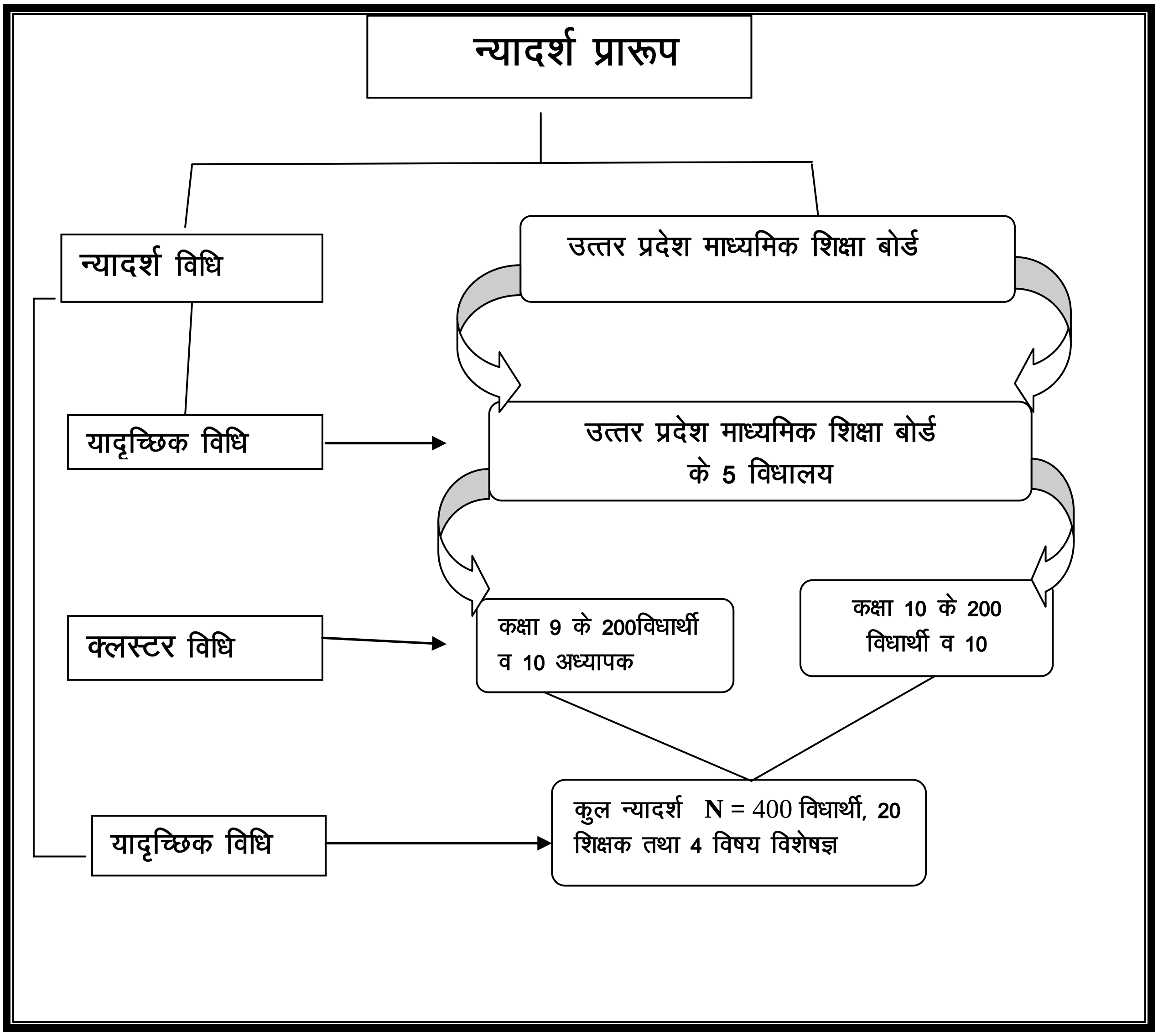

चित्र संख्या 1.3 न्यादर्श विधि का प्रदर्शन

1.10.0 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

शोधकत्री ने शोध अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार के जीवन कौशल मापक उपकरणों जैसे– समस्या समाधान, सृजनात्मक चिन्तन, तनाव प्रबन्धन, अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध व प्रभावी सम्प्रेषण आदि का अवलोकन किया परन्तु शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार विषयवस्तु विश्लेषण से सम्बन्धित प्रमाणित जीवन कौशल मापनी उपलब्ध न होने के कारण शोधकत्री द्वारा स्व–निर्मित जीवन कौशल मापनी का निर्माण किया जाएगा।

1.11.0 अध्ययन हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हतु प्रदत्तों की प्रकृति के अनुसार वर्णात्मक एवं निष्कर्षात्मक सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा, जिसके अन्तर्गत प्रमुख सांख्यिकीय प्रविधियाँ निम्नलिखित है–

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- पाई चार्ट प्रस्तुतीकरण
- प्रतिशत
- ग्राफिक प्रस्तुतीकरण

1.12.0 शैक्षिक निहितार्थ

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सामाजिक विज्ञान के पाठयक्रम, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण, प्रशिक्षण विधियों, प्रशासकीय प्रक्रियाओं, निर्देशन तथा सेवाओं में सुधार किया जा सकेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय के चुनाव व पाठयक्रम तथा जीवन कौशलों के बारे में महत्वपर्णू सूचनाऐं प्राप्त हो सकेगी।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से विधार्थियों में जीवन कौशलों का विकास प्रभावी ढंग से हो सकेगा।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में आने वाली अभ्यास सम्बन्धी कमियों एवं खामियों में सुधारात्मक परिवर्तन किया जा सकेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों से प्राप्त परिणामों का सामान्यीकरण करके शैक्षिक एवं सामाजिक नीति को भी विकसित करने में सहायता प्राप्त होगी।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय के प्रदर्शनकला आधारित कार्यपत्रकों से विधार्थियों की अभ्यास रूचि को बढ़ाया जा सकेगा तथा साथ ही शिक्षकों को शिक्षण अभ्यास कराने तथा मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सामाजिक विज्ञान के विधार्थियों की सृजनात्मकता और रचनात्मकता को बढ़ाया जा सकेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण तथा अभ्यास को रूचिकर तथा अधिक प्रभावी रूप में प्रयोग किया जा सकेगा।
- प्रदर्शनकला आधारित कार्यपत्रकों के माध्यम से विधार्थियों की स्वअभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है, प्रस्तुत शोध के द्वारा शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थाओं को पृष्ठपोषण भी दिया जा सकेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय के प्रदर्शनकला आधारित कार्यपत्रकों की सहायता से सामाजिक विज्ञान विषय के विधार्थियों की अभ्यास रूचि को बढ़ाकर शैक्षिक उपलब्धि स्तर को सुधारने में सहायता मिलेगी।
- सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया में विधार्थियों की अभिवृत्ति, मूल्य, कौशलों का प्रभावी रूप में उपयोग किया जा सकेगा।
- विधार्थियों में संक्षिप्त चिन्तन, पारदर्शी समझ, साथियों के साथ नवीनतम ढंग से जुडे रहना, अपने अनुभवों के आधार पर स्वतंत्र रूप से समस्याओं का समाधान व स्वयं के जीवन को नियंत्रित करना और सकारात्मक आदतों जैसे कौशलों का विकास होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- विश्व स्वास्थ संगठन,(1986).द ओटावा चार्टर फॉर हेल्थ प्रमोशन, द फर्स्ट इण्टरनेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन हेल्थ प्रमोशन, यूनाइटेड नेशन्स www.ibe.who.org
- UNCRC (1989).द राइट ऑफ द चाइल्ड, यूनाइटेड नेशन्स ह्यूमन राइट्स, ऑफिस ऑफ द हाइ कमिश्नर ऑफ यूनेस्को।
- जोमटिन, (1990). वर्ल्ड डिक्लेरेशन ऑन एजूकेशन फॉर ऑल, वर्ल्ड कॉन्फ्रेन्स ऑन एजूकेशन, यूनाइटेड नेशन्सै।
- एडवर्ड बी॰ फिस्के, (2002). द वर्ल्ड डेकर एजूकेशन कॉन्फ्रेन्स 26–28 अप्रैल यूनाइटेड नेशन्स यूनेस्को, www.unesco.org
- यूनेस्को (2001).रीजनल क्लीअरिंग हाउस ऑन पॉपुलेशन एजूकेशन एण्ड कम्युनिकेशन, "लाइफ स्किल ऑन अडोलसंस प्रोडक्टिव हेल्थ–पैकेज ऑफ लेसन करिक्यूलम मैटेरियल", बैंकाक यूनेस्को।
- सिंह, एम. (2003). लाइफ स्किल एजूकेशन" इण्टर ऐजेन्सी वर्किंग ग्रुप यूनेस्को, इन www.unesco.org /is retrived on जुलाई 2006, जर्नल ऑन राइटस ऑफ द चाइल्ड, द नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी उडीसा।
- कॉबसे,(.2004).काउन्सिल ऑफ बोर्ड्स ऑफ स्कूल्स एजूकेशन इन इण्डिया, कॉबसे (2004) www.cobse.org
- विश्व स्वास्थ संगठन,(2004). इण्टरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजूकेशन एण्ड चाइल्ड राइट्स www.ibe.who.org
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, (2005).एन॰सी॰ ई॰ आर॰ टी॰, न्यू देलही www.ncert.org
- एन॰सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ (2005).अडोलसंस एजूकेशन इन स्कूल्स , न्यू देलही www.ncert.org
- क्वीले,एम॰ के॰ (2007).द इफैक्ट ऑफ लाइफ स्किल्स इन्सट्रक्सन ऑन द पर्सनल सोशल स्किल्स स्कोर्स ऑफ रूरल हायर स्कूल स्टूडेन्ट्स विद मेण्टल रिटारडेशन।

- जॉर्ज, (2007) . इनहान्सिग लाइफ स्किल्स अमंग मिडिल स्कूल स्टूडेन्ट्स . इन www. researchlifeskills.edu/adu रीट्राइव्ड ऑन अप्रैल 2008।
- इण्टर ऐजेन्सी वर्किग ग्रुप यूनिसेफ. (2007).लाइफ स्किल्स एजूकेशन प्रोजेक्ट, एम॰ पी॰ इन www.socindore.org/is रीट्राइव्ड ऑन जुलाई 2008 ।
- चौधरी, एट॰ ऑल. (2007) . लाइफ स्किल्स इन्टरवेन्सन प्रोग्राम फॉर अडोलसंस; कॉन्टेक्चुअल अप्रोच इन www.researchlifeskills.edu/adu रीट्राइव्ड ऑन दिसम्बर 2009 ।
- कॉम्पो, एट॰ ऑल. (2007) . इफेक्ट ऑफ लाइफ स्किल्स ट्रेनिग ऑन मेडिकल स्टूडेन्ट्स परफॉरमेन्स इन डीलिंग विद कॉम्पलेक्स क्लीनिकल केसेज . इन www.AADAPRT.ORG. रीट्राइव्ड ऑन दिसम्बर 2009 ।
- जॉर्ज, वाई.(2007. इनहान्सिग लाइफ स्किल्स अमंग मिडिल स्कूल स्टूडेन्ट्स . इन www researchlifeskills.edu/adu रीट्राइव्ड ऑन अप्रैल 2008।
- राव, एट॰ ऑल. (2008) . लाइफ स्किल्स प्रोग्राम एण्ड इट्स इम्पैक्ट फॉर जुवेनाइल इन कॉनफिलिक्ट लॉ इन इण्डियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल एजूकेशन वॉल्यूम –1, जुलाई।
- भावे, एस॰ वाई.(2008).लाइफ स्किल्स एजूकेश न टू रिड्यूज लेवल्स ऑफ रिस्क फेक्टर्स अडोलसंस एण्ड यंग पीपल . इन इण्डियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन वॉल्यूम न॰ 1 जुलाई 2009 पेज न॰ 01, 12 ।
- डेविड॰ टी. (2009). क्रीएटिव एण्ड थिंकिंग स्किल्स. इन www.airuniversity.org रीट्राइव्ड ऑन दिसम्बर 2009 ।
- ब्रेन इनक्वायरी सेन्टर.(2009). डिसीजन मेकिंग स्किल. इन www.headinjury.com/dms रीट्राइव्ड ऑन दिसम्बर 2010 ।
- जोशी, धर्मकीर्ती, व अन्य (2010), स्किलिंग इण्डिया : द बिलिसन पीपुल्स चैलेन्ज, सीआरआईएसआईएल– सेन्टर फॉर इकानोमिक्स मुम्बई–400076

- अपर्णा एन॰ एट॰ ऑल.(2011).लाइफ स्किल्स एजूकेशन ऑन अडोलसंस; फॉर रिलीवेन्स एण्ड इर्म्पोटेन्स". इन इण्डियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन वॉल्यूम न॰ 4 जुलाई 2012 पेज न॰ 01, 10 ।
- नॉलेज एण्ड स्किल्स इन द 21 सेन्चुरी (वॉशिंगटन डी॰ सी॰द नेशनल एकेडमिया प्रेस 2012)।
- मार्टिन के॰ नेल्सन, एट॰ ऑल. (2013).इफेक्टिवनेस ऑफ स्कूल बेस्ड लाइफ स्किल्स एण्ड अल्कोहल एजूकेशन प्रोग्राम्स।"
- भायो, जे॰ के॰ डब्ल्यू. (2014).प्राइमरी स्कूल पीपल्स लाइफ स्किल्स डवलपमेंट; द केस फॉर प्राइमरी स्कूल पीपल्स डवलपमेंट फॉर युगाण्डा" . इन युगाण्डा" जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन वॉल्यूम न॰ 7 अगस्त 2015 पेज न॰ 06, 9 ।
- मुन्सी, के॰ गुहा, एट॰ ऑल. (2014), स्टेट्स ऑफ लाइफ स्किल एजूकेशन इन टीचर एजूकेशन करिक्यूलम ऑफ सार्क कण्ट्रीज; अ कम्पेरेटिव स्टडी, जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड सोशल पॉलिसी वॉल्यूम न॰ 1 जून 2014 पेज न॰ 06, 9।
- कोनकेल, के॰ ई.(2014).इज अ लाइफ स्किल ट्रेनिग इनफ्यूजन एन इफेक्टिव स्टडी
- टू रिड्यूज सब्सटेन्स यूज अमंग एट रिस्क टीन्स इन अ मॉनीटरिंग प्रोग्राम, कोरालोडा स्टेट यूनिवर्सिटी"।
- पार्वथी, वी॰ एण्ड पिलाई, आर॰ आर.(2015).इम्पैक्ट ऑफ लाइफ स्किल एजूकेशन ऑन अडोलसन्स इन रूरल स्कूल". इन इण्डियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन वॉल्यूम न॰ 1 जुलाई 2016 पेज न॰ 01, 10 ।
- कुमार, आर॰ एस. (2015). अ स्टडी ऑन द रिलेसनशिप बिटवीन पेरेण्टल इन्फ्लूएन्स एण्ड लाइफ स्किल अमंग हाईस्कूल स्टूडेण्ट, जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड सोशल पॉलिसी वॉल्यूम न॰ 2 जून 2015 पेज न॰ 06, 9।
- यादव, बी॰ शशिकला.(2017).डवलपमेण्ट लाइफ स्किल्स प्रोग्राम एण्ड स्टडी इटस् इफेक्ट ऑन लाइफ स्किल एबिलिटी ऑफ स्टूडेण्टस् ।

- दत्ता, एल. (2018). अ स्टडी ऑफ द स्किल डवलपमेण्ट अण्डर ग्रेजुएट प्रोग्राम्स ऑफ डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी", इन इण्डियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन वॉल्यूम न॰ 8 जुलाई 2018 पेज न॰ 02, 8 ।
- प्रजापति, आर. शर्मा, एट॰ ऑल.,(2018). सिग्नीफिकेन्स ऑफ लाइफ स्किल्स एजूकेशन, कंटेम्परेरी इसूज इन एजूकेशन रीसर्च, वॉल्यूम न॰ 10,1 नवम्बर 2016 पेज न॰ 01–6, ।
- मेलिसा, के. (2018). सम 43% ऑफ कालेज ग्राण्ड्स आर अण्डरइम्प्लॉयड इन फर्स्ट जॉब,"इन www.melisa.org/lifeskills रीट्राइव्ड ऑन दिसम्बर 2018 ।
- जीवन, जे. (2019). इफेक्ट ऑफ कॉपरेटिव लर्निंग ऑन अकेडमिक एन्जाइटी सोशल स्किल एण्ड अचीवमेण्ट इन सोशल स्टडीज ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट," कंटेम्परेरी इसूज इन एजूकेशन रीसर्च, वॉल्यूम न॰ 13,1 नवम्बर 2019 पेज न॰ 01–6, ।
- हिके, एल. (1990).डेफीनेशन ऑफ लाइफ स्किल, इन www.youthinitiative.org/lifeskills रीट्राइव्ड ऑन दिसम्बर 2005 ।
- गुड,बार एव ंस्केट्स (1966), 'मैथडलॉजी ऑफ रिसर्च, साइकोलॉजी एण्ड साशेलॉजी, सेन्चुरी कफट्स इडक, न्यूयार्क।
- कैपलन, ए.(1943),' कण्टेण्ट एनालाइसिस एण्ड द थ्योरी ऑफ साइन,"फिलॉसॉफी ऑफ साइन्स 10:230–47;1943।
- Charles Fadel (2008) Global Lead, Education Cisco Systems, Inc. OECD/CERI Paris. •http://www.21stcenturyskills.org/ •http:/www.collindictionary.com
- www.centralsquarefoundation.org:info@centralsquarefoundation.org